5 स्वराज्य की नींव



विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म मुज्फ्फरपुर जिले के मीरनपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में और उच्च शिक्षा हिसार में प्राप्त की थी। कई वर्षों तक पंजाब सरकार की सेवा करने के बाद सन् 1974 से ये दिल्ली आ गए और तब से दिल्ली रहकर पूर्ण समय के लिए साहित्य सेवा में लगे हैं। आपने कहानी, उपन्यास, जीवनी, नाटक, एकांकी, संस्मरण और रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त मात्रा में लिखा हैं। आपकी प्रमुख रचनाए 'ढ़लती रात', 'स्वप्नमयी' (उपन्यास), 'संघर्ष के बाद' (कहानी संग्रह), 'नव-प्रभात', 'डॉक्टर' (नाटक), 'प्रकाश और परछाईयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक' (एकांकीसंग्रह), 'जाने-अनजाने' (संस्मरण और रेखाचित्र), 'आवारा मसीहा' (शरतचंद्र की जीवनी) आदि।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारंभ से ही स्वदेश प्रेम व राष्ट्रीय चेतना और समाज-सुधार का स्वर प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में नाटक-निर्देशक के पद पर काम किया। बाद में स्वतंत्र लेखन को अपनी जीविका का साधन बना लिया। आपका समस्त साहित्य मानवीय अनुभूतियों से जुड़ा हुआ है। आपकी रचनाओं में रोचकता एवं संवेदनशीलता सर्वत्र व्याप्त है तथा भाषा सहज व सरल है।

प्रस्तुत एकांकी 'स्वराज्य की नींव' में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में लक्ष्मीबाई के त्याग और संघर्ष का वर्णन किया गया है। स्वराज की नींव रखने में स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र स्वराज्य की नींव के पथ्थर है; जिनके त्याग, तपस्या व बलिदान के द्वारा भले ही स्वराज्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन वे स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनकर जनमानस में देशप्रेम व नवजागरण की भावना जगाने में अपनी सार्थकता समझते हैं।

पात्र

लक्ष्मीबाई	**जूही**
मुंदर	**रघुनाथराव**
तात्या	**सेनानायक**

(रंगमंच पर युद्धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखाई देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई : मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही! झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गई परंतु मंज़िल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पास करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं! सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी लेकिन झाँसी हाथ से निकल गई जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई : मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? ''जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।''

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना; स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना। सफलता और असफलता दैव के

हाथ में है। लेकिन नींव के पथ्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाई : (मुस्कराकर) शाबाश मेरी कर्नल! तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दु:ख अवश्य है कि हमारे पास शक्ति है, फिर भी हम दुर्बल हैं। हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का किला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?

जूही : जानती हूँ महारानी! हम विलासिता में डूब गए है। (तभी मुस्कराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)

मुंदर : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गए हैं? विलासिता में डूबे हैं रावसाहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।

जूही : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।

मुंदर : (मुसकराती है) ओह, समझी। तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।

मुंदर : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी, लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।

मुंदर : (सकपका कर) जूही तू तो नाराज़ हो गई। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?

लक्ष्मीबाई : जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आए थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाई : (दीर्घ नि:श्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात ही क्या थी?

जूही : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुंदर : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकर ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती है। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?

मुंदर : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देनेवाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या रघुनाथ?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गई, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का किला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथ : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौन सा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?

तात्या : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।

लक्ष्मीबाई : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पडी।

जूही : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?

लक्ष्मीबाई : तू कहती है, अच्छा। लेकिन (मुंदर का प्रवेश)

मुंदर : सरकार सेना तैयार है।

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ, तलवार सँभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाए।

तात्या : बाई साहब ! वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या ! मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)

मुंदर : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।

लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। हर-हर महादेव। (तीनों हर-हर महादेव का उद्घोष करती हैं। पृष्ठभूमि में यही उद्घोष उभरकर आता है, जो मंच पर प्रकाश के धुँधलाते न धुँधलाते सब कहीं छा जाता है। फिर धीरे-धीरे शांति छाने लगती है। प्रकाश उभरने लगता है और पृष्ठभूमि में गीतापाठ का स्वर उठता है।)

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रलय सृष्टि का विनाश **एशोआराम** विलासप्रियता **प्रतिज्ञा** प्रण **दुत्कारना** धिक्कारना **स्वराज्य** अपना राज्य **व्यग्र** आतुर **राग-रंग** गाना-बजाना **रणभूमि** लड़ाई का मैदान **अंकित** निशान लगा हुआ **उत्तेजित** भड़का हुआ

मुहावरे

अड़ जाना किसी बात को मनवाने की जिद करना **थपेड़े मारना** समस्याओं का तेजी से उभरना **हाथ से निकल जाना** अपने बस में न रहना **भूमि तैयार करना** आधार बनाना, भूमिका बनाना **नींव का पथ्थर बनना** किसी खास कार्य की शुरूआत करना **नींद हराम करना** गहरी चिंता में डाल देना **पाताल से खींच लाना** किसी इच्छित चीज को कहीं से ढूँढ लाना **आँखें खुलना** सजग होना **मौत से जूझना** साहस से मौत का सामना करना

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) रानी लक्ष्मीबाई की चिंता का कारण क्या था?

(2) बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?

(3) रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

(4) जूही सेनापति तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

(5) तात्या रानी लक्ष्मीबाई के सामने लज्जित क्यों हो उठे?

2. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) मार्ग में हिमालय अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?

(2) रानी लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भूत मिसाल थीं- समजाइए।

(3) 'स्वराज्य की नींव' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है? प्रस्तुत एकांकी के लिए कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

(4) प्रस्तुत एकांकी में से उन कथनों को छाँटिए जिससे पता चलता है कि युद्ध की छाया में भी राव साहब वैभव विलास में डूबे थे?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना।''

(2) ''शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेंगी।''

(3) ''दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और चौड़ा कर देती हैं?''

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :

(1) वह मिल सकता है, केवल सेवा, तपस्या और ..... से। (बलिदान/युद्ध)

(2) महासागर की डरावनी ..... थपेड़े मारने लगती हैं। (लहरें/हवाएँ)

(3) कौन कहता है कि ..... में डूब गए हैं? (विलासिता/तपस्या)

(4) मैं ..... के लिए नाच सकती हूँ। (विजय/स्वराज्य)

(5) हमारी ..... कलंकित न होने पाए। (श्रेष्ठता/वीरता)

5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द :

धरती और आकाश के मिलने का स्थान क्षितिज **निराशा या क्रोध में मुँह से निकलने वाली श्वास** नि:श्वास **दहीं से बननेवाला एक व्यंजन** श्रीखंड **ब्राह्मणों को खिलाया जानेवाला भोज** ब्रह्मभोज **स्वामि के प्रति श्रद्धा रखनेवाला** स्वामिभक्त

6. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :

राज्य - स्व+राज्य = स्वराज्य

देश, भाव, तंत्र, जन

7. उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :

सुन्दर - सुन्दरता - सौंदर्य

शूर - शूरता

धीर - धीरता

उदार - उदारता

स्थिर - स्थिरता

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले किसी एक स्वतंत्रता सेनानी के जीवन पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
- उन देशभक्त नारियों के नाम लिखिए जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- देश की आज़ादी के लिए शहीद होनेवाले किसी दो शहीदवीरों की फिल्म वर्गखंड में प्रस्तुत करें।

●